Introduction

प्राक्कथन

गुजरात में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अति प्राचीन काल से ही एक विशेष आकर्षण रहा है । यहां के अनेक साहित्यकारों ने अपनी मातृभाषा गुजराती के अलावा हिन्दी में भी अनवरत रूप से साहित्य सर्जना की है । यहां के जनमानस में आज भी हिन्दी के प्रति एक विशेष अभिरुचि एवं लगाव की भावना दिखाई देती है । जनमानस में सिंचित इन्हीं संस्कारों के कारण मेरी रुचि भी प्रारंभ से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की ओर रही है । मुख्य विष हिन्दी लेकर एम० ए० - करने के बाद मेरे मन में शोधकार्य करने की लालसा उत्पन्न हुई । धीरे-धीरे मन की लालसा ने इच्छा का सुदृढ़ स्वरूप धारण कर लिया और मन ने संकल्प किया कि मैं शोधकार्य करूं । अब विषय की समस्या मेरे सामने उपस्थि हुई । मैंने विचार किया कि- हिन्दी में नाटक, कहानी, उपन्यास साहित्य को लेकर तो पर्याप्त कार्य किया जा रहा है । किन्तु निबंधों पर विशेष कार्य नहीं हुआ है ।

निबन्ध साहित्य में - विशेषरूप से हिन्दी के ललित निबंध साहित्य पर उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ है। अत: मन ने ललित निबंध साहित्य पर ही कार्य कर का संकल्प कर लिया । आज शोध-प्रबंध के रूप में अपने इस संकल्प को प्रतिफलित ह देखकर मुझे अतिप्रसन्नता एवं सन्तोष का अनुभव हो रहा है ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है कि य गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। शुक्ल जी के श का यदि निबंध के सन्दर्भ में विश्लेषण किया जाय तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा किसी भी लेखक की सफलता की खरी कसौटी निबंध ही है। कालावधि की दृष्टि हिन्दी का निबंध साहित्य आज विकास के जिस बिन्दु पर पहुंच पाने में समर्थ हुआ वह निश्चय ही श्लाघ्य और प्रशंसनीय है। प्राय: यह देखा गया है कि हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं पर सामान्य से लेकर गहन गंभीर और स्थूल से लेकर

सूक्ष्म समीक्षाएं निरन्तर होती आई हैं। वहीं निबंध को इने-गिने समालोचनात्मक या सामान्य परिचयात्मक ग्रंथों में समीक्षित कर छोड़ दिया गया है। काव्य और कथा साहित्य को लेकर साहित्यिक जगत में जितने फूल और शूल बरसाये गये, उतने निबंध पर नहीं। चतुर्दिक वातावरण में साहित्य के निबंधकारों का एवं उनके निबंध साहित्य को देखने- परखने का प्रयास न के बराबर ही हुआ है। ललित निबंध हिन्दी गद्य विधा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। इतना ही नहीं हिन्दी गद्य का मार्ग प्रशस्त करने में भी अग्रणी रहा है। यदि गद्य कवियों की कसौटी है, गद्य की कसौटी निबंध है यह हम उपर कह चुके हैं। परन्तु ललित निबंधों को निबंध की भी कसौटी कहा जा सकता है। ललित निबंध साहित्य की एक विधा मात्र नहीं अपितु वह शैलीगत अमित संभावनाओं का पुंज भी है। इस तरह समीक्षा की दृष्टि से ललित निबंधों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत प्रबंध में ललित निबंधों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर इस कमी को पूर्ण करने का यत्किंचित प्रयास किया गया है।

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथराय आदि ललित निबंध गंगा के वे मोड़ हैं जहां से एक ओर तो गंगा की प्रमुख धारा पद्मा बनकर गंगासागर में विलीन हो जाती है तथा दूसरी ओर वह अनन्त स्वच्छन्द धाराओं में विभक्त होकर निबंध का विशाल डेल्टा तैयार कर देती है। सामाजिकता वैयक्तिकता में बदलने लगती है। इन वैयक्तिक निबंधों में महत्व की वस्तु है -'व्यक्ति-व्यंजना' जिसकी समुचित व्याख्या के बिना इस प्रकार के निबंधों का इतिहास समझना कठिन है और यह व्याख्या व्यक्तित्व के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक तत्वों के आधार पर ही की जा सकती है। देखा जाए तो निबंधों में कालक्रम के साथ परिवर्तन होता गया। शोध प्रबंध का अपना एक विशेष क्षेत्र एवं परिधि होती है इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के प्रमुख ललित निबंधकारों का अध्ययन और अनुशीलन [illegible] मेरे शोध-प्रबंध का ध्येय रहा है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध आठ विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है। अध्याय में निबंध की सैद्धांतिक चर्चा की गई है। निबंध गद्य विधा का एक महत्व

अंग माना गया है। प्रारंभ में निबंध शब्द का अर्थ तथा आज तक उपलब्ध निबन्ध की महत्वपूर्ण परिभाषाएं और उसके विभिन्न भेदों की चर्चा की गयी है । तत्पश्चात ललित निबंध के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालते हुए उसकी विभिन्न परिभाषाओं और स्वरूप का विस्तार से विवेचन किया गया है तथा अन्त में ललित निबंध साहित्य की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए समग्र रूप से उसके महत्व का विवेचन और मूल्यांकन किया गया है ।

दूसरे अध्याय में हिन्दी खड़ी बोली निबंध के विकास की परम्परा को बताते हुए ललित निबंध परंपरा का सूत्रपात तथा विकास के विभिन्न चरणों का विवरण प्रस्तुत किया गया है । इसके बाद चार अध्यायों में हमने अलग - अलग ऐसे चार श्रेष्ठ ललित निबंधकारों को लेकर उनके निबंधों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो ललित निबंधों के क्षेत्र में मील स्तम्भ के समान हैं तथा उसके बाद के अध्याय में प्राय: सभी मुख्य ललित निबंधकारों का सामूहिक रूप से अध्ययन प्रस्तुत किय गया है ।

तीसरे अध्याय में डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी जी को एक श्रेष्ठ ललित निबंध के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ललित निबंध लेखन का प्रौढ़ एवं परिपक्व रूप सच्चे अ में आचार्य द्विवेदी जी के ललित निबंधों में देखने को मिलता है । उनके द्वारा लिखित विभिन्न ललित निबंधों का यहां पर सविस्तार अध्ययन किया गया है। उसके महत्व को समझाते हुए तथा विविध प्रकारों में डालते हुए ललित निबंधों की विषय- वस्तु प्रस्तुत की गई है। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित हैं । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के सम्पर्क में आने के कारण उनके निबंधों में लालित्य की मधुरिमा स्पष्ट दिखाई देती है ।उनके निबंधों के विस्तृत अध्ययन से प्रस्तुत की गई भाषा शैली में विभिन्न भेदों का क्रमानुसार समावेश हुआ है । इससे वे एक सफल ललित निबंध लेखक होते हुए भी श्रेष्ठ शैलीकार के रूप में प्रदर्शित हैं । द्विवेदी जी के द्वारा प्रस्तुत इन ललित निबंधों में लालित्य की संयोजना से उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है

अन्त में उनके द्वारा रचित ललित निबंध इस रचनाओं का उद्देश्य निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

चौथा अध्याय ललित निबंधकार पं० विद्यानिवास मिश्र को लेकर लिखा गया है। इस अध्याय में श्री मिश्र जी द्वारा रचित ललित निबंध रचनाओं की विषय- वस्तु को विविध प्रकारों में बांटा गया है। वे हिन्दी ललित निबंध परम्परा के श्रेष्ठ निबंध शिल्पी हैं । आचार्य द्विवेदी जी ने जिस रेशमी चिक्कलता तथा कोमलकांत पदावली की नींव डाली थी, श्री मिश्र जी ने अपने निबंधों के द्वारा इसे परिपुष्ट किया है । वे शैली के सिद्धहस्त कलाकार हैं । उनके निबंधों की भाषा शैली को विविध प्रकारों में बांटकर यहां पर प्रस्तुत किया गया है तथा अन्त में उनके महत्व का निरूपण किया गया है ।

पांचवें अध्याय में डा० कुबेरनाथ राय को अद्यतन लेखन के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ललित निबंधकार के रूप में प्रस्तुत किया गया है । श्री कुबेरनाथ राय ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और विद्यानिवास जी के द्वारा डाली गई - परम्परा को आगे बढ़ाया है । उनके द्वारा रचित विविध ललित निबंध संग्रहों का विस्तृत अध्ययन किया गया है । बहुचर्चित ललित निबंध लेखक कुबेरनाथ राय जी की निबंध कृतियों के गहनतम अध्ययन से निबंधों की भाषा शैली प्रस्तुत की गई है । भाषा की कलात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा शैलीकारिता के क्षेत्र में उन्होंने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रकृति वर्णन में उन्होंने ऐसी शैली अपनायी है जो मनुष्य से एकात्मकता स्थापित करती है । कहीं- कहीं मीठे व्यंग्य भी किए हैं । अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए उनके ललित निबंधों का महत्व समझाया गया है ।

छठे अध्याय में श्री सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन `अज्ञेय` को ललित निबंधकार के रूप में चित्रित किया गया है ।`अज्ञेय` ने गद्य साहित्य के क्षेत्र में अनेक, ललित निबंध संग्रह देकर निबंध साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान

दिया है । उनके विविध ललित निबंध संग्रहों का विस्तृत अध्ययन करके विषय-वस्तु प्रस्तुत की गई है, और उसके विविध भेद यहां पर किए गए हैं । उनके अधिकांश निबंध आत्मपरक निबंध ही हैं । भाषा शैली की दृष्टि से उनके सभी निबंधों में सर्वत्र - लालित्य की धारा प्रवहमान दिखाई पड़ती है । उन्होंने सूत्र व्याख्या शैली, संलाप, वातालाप और प्रश्नोत्तर आदि शैलियों का अभिनवरूप से प्रयोग किया है । अज्ञेय जी के निबंधों में इन शैलियों की पृथक और स्वतंत्र सत्ता देखने को मिलती है । उनकी यह ललित निबंध कला विकास की अनंत संभावनाओं से युक्त है । अन्त में उनके ललित निबंधों का महत्व बताते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

सातवां अध्याय सामूहिक रूप से प्रमुख ललित निबंधकारों पर प्रस्तुत किया गया है । इन निबंधकारों में कन्हैयालाल मिश्र `प्रभाकर`, रामवृक्ष बेनीपुरी जी, डा० गुलाबराय, वियोगी हरि, शांतिप्रिय द्विवेदी, शिवप्रसाद सिंह, आचार्य ललिता-प्रसाद `सुकुल`, इन्द्रनाथ मदान, डा० जगदीशचन्द्र माथुर, भगवतशरण उपाध्याय, विवेकीराय, डा० धर्मवीर भारती आदि के ललित निबंधों का विस्तृत अध्ययन किया गया है । उन्होंने हिन्दी ललित निबंध की विधा को पूर्ण विकसित तथा पल्लवित किया है । कन्हैयालाल मिश्र `प्रभाकर जी` ने संस्मरणात्मक तथा रेखाचित्रपरक ललित निबंधों को लिखकर हिन्दी ललित निबंध - साहित्य को नया मोड़ दिया है। उनके निबंधों की भाषा शैली में एक स्वस्थ प्रवाह और जीवंतता दृष्टिगोचर होती है । उन्होंने निबंधों के द्वारा समाज के नितांत उपेक्षित और तिरस्कृत चरित्रों की गहरी और वास्तविक सहानुभूति देते हुए चित्र उपस्थित किए हैं । `जिन्दगी मुस्कराई`, `बाजे पायलिया के घुंघरू`, `दीप जले शंख बजे `, `माटी हो गई सोना`, आदि उनके निबंध संग्रह ललित निबंध क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं । रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने हिन्दी के ललित गद्य लेखन की परम्परा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहां पर उनके द्वारा रचित ललित निबंध की कृतियों के अध्ययन से वर्ण्य-वस्तु का ललित एवं सजीव रूप उभारा गया है। उनके ललित निबंध संग्रहों में `माटी की मूरतें`, `मील के पत्थर

तथा `गेहूं और गुलाब`, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। डा० गुलाबराय जी ने अपने ललित निबंध संग्रहों, `मेरे निबंध जीवन और जगत`, `फिर निराशा क्यों ?` आदि में वैयक्तिक शैली को प्रस्तुत किया है। इनके निबंधों में प्रस्तुत हल्की- फुल्की शैली उनको ललित निबंध परम्परा का प्रमुख हस्ताक्षर सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण मानी जा सकती है। वियोगी हरि, द्वारा लिखित ललित निबंध संग्रह- `यों भी तो देखिए` में पृथक-पृथक व्यक्तियों के चित्र खींचे गए हैं तथा व्यक्तित्व प्रधान शैली में लिखे गये वे निबंध उनके ललित निबंधकार के रूप को उभारते हैं। ललित निबंधकार शांतिप्रिय द्विवेदी जी के ललित निबंधों की विषय वस्तु में व्यक्ति - उनका परिवेश, उसका युग, और रचनात्मक चिंतन वर्णित किया गया है। डा० शिवप्रसाद सिंह ने ललित निबंध लेखन की, परंपरा में तीन निबंध संग्रह `चतुर्दिक`, `कस्तूरी मृग`, और `शिखरों का सेतु` देकर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। आचार्य ललिताप्रसाद `सुकुल` ने अपने ललित निबंधों के द्वारा कुछ प्रमुख व्यक्तियों के सम्बंध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। डा० जगदीशचन्द्र माथुर द्वारा रचित `दस तसवीरें` चरित लेखों का संग्रह है जो संस्मरण के से वातावरण में आरंभ होते हैं। भगवतशरण उपाध्याय ने सांस्कृतिक ललित निबंधों के द्वारा प्राचीन भारतीय संस्कृति का सजीव चित्र उपस्थित किया है। विवेकीराय तथा डा० धर्मवीर भारती के ललित निबंधों में उनका बहुश्रुतज्ञान, गहन गंभीर अध्ययन तथा चिंतन -मनन के दर्शन होते हैं।

आठवां अध्याय उपसंहार का है। इसमें उपलब्धियों और निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हुए यह बताया गया है कि ललित निबंधों की परम्परा हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक युग की देन है तथा इसके विकास की अनंत संभावनाएं हैं।

इस शोध-प्रबंध को लिखते समय मैंने जिन विद्वानों की बहुमूल्य पुस्तकों से लाभ उठाया है - उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। मैं भूतपूर्व

हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० मदनगोपाल जी गुप्त के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं- जिन्होंने मुझे इस महत् कार्य को करने की प्रेरणा प्रदान की। मैं वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० दयाशंकर जी शुक्ल के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं जिन्होंने मुझे इस कार्य के लिए निरंतर प्रोत्साहित किया है। हिन्दी विभाग के सभी प्राध्यापकों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं- जिन्होंने समयानुसार मेरी सहायता की है। अन्त में सबसे अधिक कृतज्ञ हूं मैं आदरणीय डा० प्रेमलता बाफना की, जिनके सफल निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध तैयार हुआ है। उन्होंने अपने समय की परवाह न करते हुए जब भी मैं कठिनाईं लेकर उपस्थित हुईं तत्क्षण उसका सतर्क निवारण किया। उन्होंने मेरा पग-पग पर मागदर्शन करने के साथ ही निराशा के क्षणों में साइस एवं संबल देकर मुझे उल्लसित भी किया। उनकी कृपा एवं सहयोग के फलस्वरूप ही यह प्रबन्ध प्रस्तुत करने में मैं समर्थ हुईं हूं।

इस शोध-प्रबंध को मैंने यथासाध्य प्रामाणिक तथ्यों और आधारों की भूमिका पर रखकर परिपूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया है। फिर भी इसमें यत्र-तत्र त्रुटियां रह गईं हों तो विद्वज्जन इसे मेरे अज्ञान का ही परिणाम मानें।
स्वमस्तु -

Raval N. L.
(कुमारी निर्मला रावल)